[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

उषा प्रियंवदा के साहित्य में स्त्री जागरण व चेतना।

– गुरमीत कौर

स्त्री को मुक्त करने के लिए जो व्यापक प्रयास चल रहे थे, उनका प्रभाव साहित्य पर भी दिखाई देने लगा है। सभी भाषाओं के साहित्य में समय–समय पर जो मौलिक विचार व्यक्त होते रहे हैं उनमें स्त्री मुक्ति और उनकी विभिन्न समस्याओं को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उषा प्रियंवदा जी ने भी सामाजिक चुनौतियों को बड़ी सूक्ष्मता से समझा और उसकी अभिव्यक्ति अपनी कथाओं में बड़ी कुषलता से की है। उन्होंने बिखरते सामाजिक मूल्यों को संवारने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। उनका मानना है कि आधुनिक नारी अधिक स्वतन्त्र, स्वाबलंबी और आत्मनिर्भर हो चुकी है। आज नारी की स्वतंत्र अस्मिता है तथा वह अपने अधिकारों को हासिल करना चाहती है। वह राष्ट्र के प्रति सहानुभूति और राष्ट्रीय सरोकारों को लेकर निजी राय व्यक्त कर रही है। आधुनिक नारी परिवार के साथ–साथ अपनी स्वतन्त्रता, स्वायत्त व्यक्तित्व की पहचान और अपने सुख की कामना उसकी चेतना का ही परिणाम है। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' नामक उपन्यास की नायिका सुषमा कहती है, ''मैं अपना काम ठीक करती हूँ। मुझसे किसी को षिकायत नहीं है, फिर मेरे व्यक्तिगत जीवन में किसी को दखल देने का क्या हक हैघ मैं वार्डन हूँ, इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं हर समय गाम्भीर्य का नकली खेमा चढ़ाए रहूँ।''[1]

1. उषा प्रियंवदा, पचपन खम्भे लाल दीवारें, पृ0 66

उषा प्रियंवदा जी ने नारी के परम्परागत नारी रूप को ही नहीं उघाड़ा अपितु उसके जीवन के हर पहलू पर अपनी लेखनी चलाई है। उषा जी का उपन्यास उनकी इसी सोच को प्रस्तुत करता है। ''कैंसर जैसी बीमारी जिसका नाम सुनते ही हर व्यक्ति के मन में मृत्यु का भय व्याप्त हो जाता है परन्तु 'भया कबीर उदास' की नायिका लिली को जब अपने वक्ष कैंसर के विषय में पता चलता है तो वह स्वयं को समझाती है, ''मुझे किसी की करुणा या संवेदना नहीं चाहिए। मुझे अपना स्वर स्वयं

कटु लगा,'' मैं सब झेलूंगी और अकेले ही।''[1]

आज नारी पुरानी रूढ़ियों और तरह–तरह के अत्याचारों से मुक्त अपने अधिकारों की रक्षा और व्यापक रूप में नारी समुदाय की स्वतंत्रता की दिषा में आगे बढ़ रही है। वह समाज में सार्वजनिक क्षेत्र में अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष कर रही है। महादेवी वर्मा जी कहती है, 'हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुत्ता चाहिए, न किसी का प्रभुत्त्व। हमें केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्व चाहिए, जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं परन्तु जिसके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी।''[2]

'अन्तर्वषी' नामक उपन्यास में वाना और सारिका के माध्यम से नारी की ऐसी स्थिति का चित्रण किया है। सारिका वाना के अन्दर सपने ही नहीं जगाती बल्कि पूरा करने की इच्छा हासिल भी जागृत करती है। यथा, ''जब तू अपने अन्दर से उठती एक पुकार सुनोगी तब पंख फैलाकर उठने की शक्ति हमें स्वयं आ जायेगी।''[3]

1. उषा प्रियवदा, 'भया कबार उदास', पृ0 34
2. महादेवी वर्मा, 'श्रृंखला की कड़ियां', पृ27–28
3. उषा प्रियंवदा, अन्तर्वषी, पृ0 108

आज नारी चेत रही है। उसे अपने अधिकार, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान हो गयी है। आज उसने अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया है। इस सन्दर्भ में नारी मुक्ति आंदोलन के महत्व को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। दीप्ति नवल का मानना है, ''नारी मुक्ति आंदोलन ने भारतीय नारी को जागृत करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। आज वह पुरुष की दासी नहीं रह गई। आज नारी की अपनी अलग पहचान है, उसका अपना एक अलग व्यक्तित्व है। आज उसने अपने

पाँव पर खड़ा होना सीख लिया है।''[1] इस समस्त स्थितियों का प्रभाव उषा जी के उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' में दिखाई देता है। वह एक चेतनषील व जागरूक नारी पात्र चित्रित की गई है। राधिका के पिता जब दूसरा विवाह करते हैं तो राधिका बहुत दुःखी होती है और वह घर छोड़ने के लिए तैयार हो जाती है, जा क्यों नहीं सकती है, राधिका ने मन में सोचा, उसने बी.ए. का इम्तहान दिया है। पास तो हो जी जाएगी। फिर वह नौकरी कर लेगी, कहीं रिसेप्षनिस्ट या एयर–होस्टेस या सेल्स गर्ल।[2]

आधुनिक नारी परम्परागत रूढ़ियों में बंधना पसन्द नहीं करती क्योंकि वह सतर्क हो गयी है। वह अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए समाज की खोखली मान्यताओं को मानने से इन्कार करती है। 'एक कोई दूसरा' नामक कहानी की नायिका अपने घरवालों को एक अमीर लड़कों के साथ शादी करने से इन्कार कर देती है। यथा, '' मैं उन्हें यह न समझा सकी कि ये मेरी झूठी लज्जा नहीं है। चमकीले पत्थरों के ये टुकड़े मुझे अब न खरीद सकेंगे। मेरा समस्त व्यक्तित्त्व इस परिस्थिति को स्वीकार करने का विद्रोह कर रहा है।''[1]

1. दाप्त नवल, 'धमयुग' नारा अक 5 माच स 15 माच, 1995, पृ0 14
2. उषा प्रियंवदा, 'रुकोगी नही राधिका', पृ0 46

उषा प्रियंवदा जी ने अपने कथा साहित्य में नारी चेतना को सही ढंग एवं रूप से उभारने का प्रयत्न किया है क्योंकि उन्होंने अपने अनुभव की पूंजी के माध्यम से यह सिद्ध करने की कोषिष की है कि स्त्री मात्र देह नहीं इसके परे भी इसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। जब तक स्त्री अपनी शक्ति, अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्व

को नही पहचानेगी तब तक नारी सषक्तिकरण सम्भव नहीं है। वर्तमान समय में सुषिक्षित नारियाँ अपनी कार्यकुषलता, कर्मठता तथा आर्थिक सक्षमता के दम पर पुरुष समाज में अपनी सम्मानित जगह बना रही है।

1. उषा ाप्रयवदा, 'एक काइ दूसरा', पृ0 18